प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पर्वतीय क्षेत्रों में सतत कृषि यन्त्रीकरण एवं रणनीति विषय पर अर्न्तराष्ट्रीय पैनल चर्चा का आयोजन

पंतनगर। 20 जुलाई 2021। विश्वविद्यालय के गृहविज्ञान महाविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना-कृषि एवं महिलाऐं द्वारा आईसीएआर, नई दिल्ली के तत्वाधान में मनाये जा रहे भारत का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत 'पर्वतीय क्षेत्रों में सतत कृषि हेतु यन्त्रीकरण-संभावनायें एवं रणनीति' विषय पर वर्चुअल अर्न्तराष्ट्रीय पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट, के साथ दून विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, डा. गजेन्द्र सिंह, एवं वैज्ञानिक, सी.आई.ए.ई., भोपाल, डा. के.पी. सिंह, ने विचार व्यक्त किये।

कार्यवाहक कुलपति, डा. ए.के. शुक्ला ने पर्वतीय क्षेत्र में सतत कृषि के बारे में बताते हुए कहा कि पर्वतीय क्षेत्र में कृषि, आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है परन्तु छोटे और सीढीनुमा खेत, तकनीकों एवं जानकारियों का आभाव कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि कार्य हेतु कम लागत वाले कृषि यंत्र विकसित करने की आवश्यकता है।

डा. बी.एस. बिष्ट ने पर्वतीय कृषि की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में सिंचाई एवं परिवहन सुविधाओं की कमी, कृषि यंत्रों की मरम्मत, फसल को जंगली जानवरों से नुकसान, कम उत्पादन, मूल्य संवर्धन की सुविधाओं में कमी, कृषि कार्यो तथा कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रहा है। इसके अतिरिक्त पर्वतीय कृषि अभी भी परम्परागत तरीकों व परम्परागत यंत्रों पर आधारित है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में पर्वतीय कृषि का यांत्रिकीकरण करने की अत्यंत आवश्यकता है, जिससे स्थानीय लोंगो को रोजगार मिल सकेगा और पलायन भी रूकेगा। डा. बिष्ट ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि के यांत्रिकीकरण में अनेक बधाएं आती है जिसे शोध व प्रसार कार्यक्रम के द्वारा दूर किया जा सकता है।

कार्यवाहक निदेशक शोध, डा. सुभाष कुमार ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में ज्यादातर कृषि कार्य हाथ के द्वारा किये जाते है, जिससे अत्यधिक श्रम एवं शक्ति की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि पर्वतीय क्षेत्र में यांत्रिकीकरण वर्तमान समय की आवश्यकता है, जिसके तहत छोटे एवं हल्के कृषि यन्त्र बनाये जाने की जरूरत है। डा. के.पी. सिंह ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्र की प्रमुख फसलें, फल, बेमौसमी सब्जियां एवं मसालों की राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय बाजार में काफी मांग है परंतु आधुनिक तकनीक की कमी होने के कारण उत्पादन प्रभावित हो रहा है। उन्होंने सी.आई.ए.ई., भोपाल द्वारा विकसित पर्वतीय क्षेत्र के अनुकूल कृषि यंत्रों एंव उपकरण की जानकारी भी दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. ए.के. शुक्ला ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. सीमा क्वात्रा द्वारा दिया गया। यह कार्यक्रम डा. दीपा विनय के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

१.) डा. बी.एस. बिष्ट

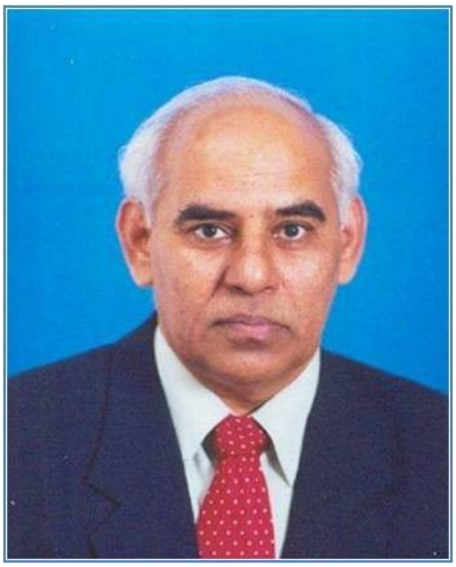

२.) डा. गजेन्द्र सिंह

(३.) डा. के.पी. सिंह।

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य वक्ता